Subject : Sociology

Class : B.A./ M.A.

Year/Semester : III Year/ II Semester

Name of the Paper : Pioneers of Indian Sociology/Contemporary Indian Society

Topic : Sanskritization

Sub Topic : Meaning and Characteristics of Sanskritization

Key Words : Factors of Sanskritization , Sanskritization and Social Change, Some important concepts related to Sanskritization

By

Dr. Jay Prakash Yadav

(Assistant Professor)

Department of Sociology

Faculty of Social Sciences

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith

Varanasi-221002(UP), India

Email- apkajay@gmail.com

स्व–घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नही करेंगे और इसका उपयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगे। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है, वह प्रामाणिक है और मेरी जानकारी के अनुसार सर्वोत्तम है।

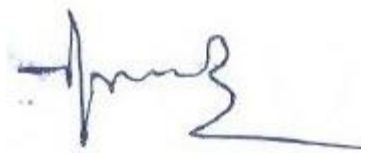

संस्कृतिकरण (Sanskritization)

- एम. एन. श्रीनिवास नें **'संस्कृतिकरण'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कर्नाटक राज्य के कूर्ग लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में होनें वाले परिवर्तनों के विश्लेषण के लिए किया था।
- एम. एन. श्रीनिवास नें अपनीं प्रसिद्ध पुस्तक **"दक्षिण भारत के कूर्गों में धर्म और समाज"(Religion and Society Among the Coorges of South India,** 1952) में इस शब्द का पहली बार प्रयोग किया था।
- मैसूर के कूर्ग लोगों का अध्ययन करते समय श्रीनिवास नें पाया कि निम्न जाति के लोग ब्राह्मणों की कुछ प्रथाओं को अपनाने तथा अपनी स्वयं की कुप्रथाओं जैसे–मांस खानें, शराब पीनें आदि को छोड़नें में लगे हुए थे।

- वे ब्राह्मणों की भोजन सम्बन्धी आदतों, उनकी वेशभूषा तथा कर्मकाण्डों को अपनाकर अपनी स्थिति को उॅचा उठानें का प्रयत्न कर रहे थे।
- गतिशीलता की इस प्रक्रिया का वर्णन करनें के लिए श्रीनिवास ने प्रारम्भ में **'ब्राह्मणीकरण'** शब्द का प्रयोग किया।
- कुछ दिनों बाद श्रीनिवास नें कुछ कारणों से **'ब्राह्मणीकरण'** के स्थान पर **'संस्कृतिकरण'** शब्द स्वीकार किया।

संस्कृतिकरण का अर्थ (Meaning Of Sanskritization)

श्रीनिवास नें संस्कृतिकरण को प्रारम्भ में इस प्रकार से परिभाषित किया, ''एक निम्न जाति एक या दो पीढ़ीयों में शाकाहारी बनकर मद्यपान को छोड़कर तथा अपनें कर्मकाण्ड एवं देवगण का संस्कृतिकरण कर संस्तरण प्रणाली में अपनीं स्थिति ऊँची उठानें में समर्थ हो जाती है, संक्षेप में वह जहाँ तक संभव था ब्राह्मणों की प्रथाओं, अनुष्ठानों एवं विश्वासों को अपना लेती है। साधारणतः निम्न जातियों द्वारा ब्राह्मणी जीवन प्रणाली को प्रायः अपना लिया जाता है। यद्यपि सैद्धान्तिक रुप से यह वर्जित था।

श्रीनिवास नें बाद में अपनीं इस परिभाषा में संशोधित करते हुए लिखा कि ''संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपनें रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और पद्धति को बदलता है। सामान्यतः ऐसे परिवर्तनों के बाद निम्न जाति, जातीय संस्तरण की प्रणाली में, स्थानीय समुदाय में उसे जो परम्परागत रुप से स्थिति प्राप्त है, उससे उच्च स्थिति का दावा करनें लगती है। सामान्यतः बहुत दिनों तक बल्कि वास्तव में एक–दो पीढ़ियों तक दावा किये जानें के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।''

संस्कृतिकरण की विशेषतायें (Characteristics of Sanskritization)-

1. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का सम्बन्ध निम्न जातियों की जीवन–शैली में होनें वाले परिवर्तनों से है।

2. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत अपनें से उच्च जातियों की जीवन विधि का अनुकरण किया जाता है।

3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित जातियों में मात्र पदमूलक परिवर्तन (Positional Change) होता है न कि संरचनात्मक।

4. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल निम्न हिन्दू जातियों में ही नहीं, बल्कि जनजातियों तथा अर्द्धजनजातीय समूहों में भी पायी जाती है।

5. संस्कृतिकरण के आदर्श या मॉडल एक से अधिक होते हैं।

6. संस्कृतिकरण सामाजिक गतिशीलता की एक सामूहिक प्रक्रिया है न कि व्यक्तिगत।

7. भारतीय सन्दर्भ में संस्कृतिकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया रही है।

8. संस्कृतिकरण के द्वारा सामाजिक संरचना में उॅचे पद या स्थिति का दावा किया जाता है।

9. संस्कृतिकरण की अवधारणा सन्दर्भ समूह की अवधारणा से मिलती–जुलती है।

10. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया संस्कृतिकरण से गुजरनें वाली जाति की महत्वाकांक्षाओं एवं प्रयत्नों का सूचक है।

11. संस्कृतिकरण करनें वाली जातियां दो या तीन पीढ़ी पहले से अपना सम्बन्ध किसी उच्च जाति या प्रभुत्व सम्पन्न जाति से जोड़ती हैं।

12. प्रो.योगेन्द्र सिंह संस्कृतिकरण को एक प्रत्याशी समाजीकरण की प्रक्रिया मानते हैं।

संस्कृतिकरण के कारक (Factors of Sanskritization)–

1. आधुनिक शिक्षा।
2. प्रजातन्त्रीकरण।
3. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास।
4. आर्थिक सुधार कार्यक्रम।
5. पश्चिमीकरण।
6. नगरीकरण।

7. सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलन।

8. राजनैतिक कारक।

9. धार्मिक स्थलों एवं मान्यताएं।

10. संविधान एवं सामाजिक अधिनियम।

संस्कृतिकरण और सामाजिक परिवर्तन (Sanskritization And Social Change)–

1. निम्न जातियों की जीवन–शैली में परिवर्तन।
2. अनुकूलन की समस्या।
3. धर्म–परिवर्तन की समस्या।
4. स्थानीय गतिशीलता में वृद्धि।
5. स्थायित्व का अभाव।
6. शक्ति संरचना में परिवर्तन।
7. अन्तर्जातीय सम्बन्धों एवं तनावों में वृद्धि।

8. अपराधों में वृद्धि।

9. जातिगत नियमों की कठोरता में कमीं।

10. असंस्कृतिकरण।

संस्कृतिकरण से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएं

(Some important concepts related to Sanskritization)–

- **पुनर्संस्कृतिकरण–(Re-sanskritization)**–इस अवधारणा का प्रयोग प्रो. योगेन्द्र सिंह नें किया था। पश्चिमीं संस्कृति के रंग में रंगे लोग जब भारतीय संस्कृति को पुनः अपनानें के लिए भारतीय विचारधारा, जीवन पद्धति, भोजन की आदतों तथा सांस्कृतिक प्रतीकों को अपनानें का प्रयास करते हैं तब यह प्रक्रिया पुनर्संस्कृतिकरण कहलाती हैं।
- **अ–संस्कृतिकरण(De-sanskritization)–** अ–संस्कृतिकरण, संस्कृतिकरण के विपरीत वह प्रक्रिया है जिसमें ब्राह्मण या परम्परागत रुप से उच्च जातियां अपनें से निम्न जातियों की आदतों, जीवन–शैली तथा कर्मकाण्डों

आदि को अपना लेती है। संस्कृतिकरण की वजह से जहां शूद्र जनेउ पहननें लगे हैं। वहीं असंस्कृतिकरण की वजह से ब्राह्मण अब मांसाहार भी ग्रहण करनें लगे हैं तथा बहुत सी उच्च जातियां अपनें आप को ओ.बी.सी., एस.सी., एस.टी. आदि में सम्मिलित किये जानें हेतु आये दिन धरना–प्रदर्शन तथा आन्दोलन तक का भी सहारा लेती हैं ताकि उन्हें भी सरकारी एवं गैर–सरकारी नौकरियों में ज्यादा से ज्यादा आरक्षण मिल सके।

संस्कृतिकरण की अवधारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन–

1. श्रीनिवास नें स्वयं यह स्वीकार किया है कि संस्कृतिकरण काफी जटिल और विषम अवधारणा है। यह भी संभव है कि इसे एक अवधारणा माननें के बजाए अनेक अवधारणाओं का योग मानना अधिक लाभदायक रहे।

2. बी. कुप्पूस्वामी संस्कृतिकरण को संदर्भ समूह प्रक्रिया का एक उदाहरण मानते हैं लेकिन भारतीय समाज में संदर्भ समूह की सदस्यता प्राप्त करना इस कारण असंभव है कि यहां जन्म पर आधारित जाति–व्यवस्था पायी जाती है।

3. श्रीनिवास नें संस्कृतिकरण की इकाई का भी स्पष्टता से उल्लेख नहीं किया है अर्थात् संस्कृतिकरण एक वर्ण, जाति, गोत्र में से किसके द्वारा किया जाता है।

सन्दर्भ पुस्तकें–

- 1. श्रीनिवास एम. एन,2002, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह जे.पी.,2003, सामाजिक परिवर्तन : स्वरुप एवं सिद्धान्त, प्रेंटिस हाल आफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
- मुकर्जी रवीन्द्र नाथ, 2002, भारत में सामाजिक परिवर्तन, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
- 4. गुप्ता एम.एल. एवं षर्मा डी,डी, 2019, भारतीय समाजशास्त्र के पथ प्रदर्शक,साहित्य भवन पब्लिकेशन्स,आगरा।
- 5. अग्रवाल जी.के,2019, समाजशास्त्र, एसबीपीडी पब्लिशिंग,आगरा।

धन्यवाद